REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

राजस्थान में जन–जाग्रति व कांतिकारी विचारधारा के अग्रदूत ठाकुर केसरीसिंह बारहठ

डॉ. प्रमोद कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग , राजकीय महाविद्यालय, बारां, राजस्थान.

प्रस्तावना (Introduction) –

राजस्थान के स्वतंत्रता समर में ठाकुर केसरीसिंह बारहठ का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। उनका व्यक्तित्व विभिन्न गुणों से समलंकृत था। वे कवि और महान् क्रांतिकारी होने के साथ ही समाज सुधारक और राजनीतिक पथ प्रदर्शक भी थे। प्रारम्भ में उन्होंने सामाजिक सुधारों एवं शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से राजपूताने में अंग्रेजी शासन के विरूद्ध जनजाग्रति का प्रयास किया परन्तु सीघ्र ही वह सुधारवाद से उग्रवाद की ओर मुड़ गये और उनका रूझान क्रांतिकारी गतिविधियों की ओर हो गया। ब्रिटिश शासन के विरूद्ध संघर्ष में बढ़–चढ़कर भाग लेने के कारण उन्हें महान् यातनाएं सहन करनी पड़ीं। उन्होंने स्वयं के साथ ही अपने सम्पूर्ण परिवार को देश की सेवा में समर्पित कर देशभक्ति एवं त्याग का एक महान् उदाहरण सबके समक्ष पेश किया। प्रस्तुत आलेख उनके इसी योगदान को रेखांकित करने का उपक्रम ळें

शोध प्रविधि (Methodology) –

उक्त शोध कार्य में प्राथमिक स्त्रोत के रूप में केसरीसिंह बारहठ द्वारा लिखित पत्रों को आधार बनाया गया है। द्वितीयक स्त्रोतों के रूप में ऐतिहासिक व साहित्यिक ग्रन्थों से प्राप्त सामग्री को आधार बनाते हुए उनका गहनतापूर्वक मूल्यांकन तथा विश्लेषण किया गया है। प्राप्त तथ्यों का गहन विश्लेषण करने के पश्चात वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष प्रतिपादित करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द (Keywords) –

क्रांतिकारी, राजपूत, चारण, राष्ट्रीय शिक्षा, नवजागरण, राजपूताना, क्षात्र–धर्म, जातीय सुधार, देशभक्ति, अभिनव भारत समिति, वीर भारत सभा, क्रांतिकारी, गुप्त समितियां, दिल्ली षड़यंत्र केस, हजारीबाग सेन्ट्रल जेल

सामान्य सारांश (Abstract) –

राजस्थान की वीर प्रसूता भूमि ने यों तो अनेक महान् विभूतियों को जन्म दिया है परन्तु बारहठ केसरीसिंह का व्यक्तित्व उनमें कुछ अनूठा और विशिष्ट दृष्टिगोचर होता है। चारणों के प्रसिद्ध 'सौदा' बारहठ वंश में जन्म लेने के कारण उनको महान् संस्कार विरासत में मिले थे। पिता कृष्णसिंह के सानिध्य में उन्होंने प्रारम्भ से ही अपने अन्दर उन गुणों को विकसित किया जो आगे चलकर उनकी महान्ता का कारण बने।

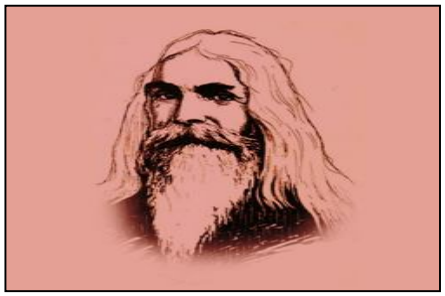

केसरीसिंह का व्यक्तित्व विभिन्न गुणों से समलंकृत था। वे कवि और महान् क्रांतिकारी होने के साथ ही समाज सुधारक और राजनीतिक पथ प्रदर्शक भी थे। अपने पिता के स्वाभिमानी एवं स्वतंत्र

विचारों से प्रभावित केसरीसिंह प्रारम्भ से ही विभिन्न व्यक्तियों एवं विचारधाराओं के सम्पर्क में आये जिससे उनके व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास हुआ। वह एक निर्भीक वक्ता एवं कवि थे जिन्होंने राजपूताने की जनता और देशी नरेशों को अपनी ऐतिहासिक परम्पराओं एवं गौरव का भान कराकर ब्रिटिश सत्ता के सम्मुख घुटने टेकने पर धिक्कारा। 1903 ई. में अपनी काव्य शक्ति का परिचय देते हुए उन्होंने मेवाड़ के महाराणा फतहसिंह को ''चेतावणी रा चूंगट्या'' द्वारा दिल्ली दरबार में भाग लेने से रोका था।

केसरीसिंह ब्रिटिश दासता के नीचे कराहते हुए भारतीय समाज की पतितावस्था से काफी खिन्न थे। उन्होंने सदैव इस बात पर जोर दिया कि राजनैतिक चेतना सामाजिक और शैक्षणिक सुधारों द्वारा ही लाई जा सकती है। इसी कारण वे जीवनभर सामाजिक सुधारों एवं शैक्षणिक गतिविधियों से जुड़े रहे। 1900 से 1914 ई. के दौरान उन्होंने जातीय और सामाजिक सुधारों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस दौरान उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, कुप्रथाओं एवं रूढ़ियों के विरूद्ध जाग्रति एवं संगठन द्वारा राजपूताने में जनजागरण के अपूर्व प्रयास किए। उनका विचार था कि बच्चों एवं नवयुवकों को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिये, जिससे उन्हें अपनी जाति, देश एवं संस्कृति का वास्तविक ज्ञान हो और उनमें आत्माभिमान एवं देशभक्ति के संस्कार पैदा हों। इसी उद्देश्य से उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचार–प्रसार की कई योजनाएँ बनाईं और प्रयास किये।

परन्तु शीघ्र ही उनका झुकाव सुधारवाद से क्रांतिवाद की ओर हो गया और वह राजपूताने में अंग्रेजों के विरूद्ध चलाऐ जा रहे क्रांतिकारी महासमर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गये। उन्होंने अपने सम्पूर्ण परिवार को मातृभूमी की स्वतन्त्रता हेतु क्रांति के पथ पर अग्रसर कर दिया। क्रांतिकारी कार्यों एवं योजनाओं में सक्रियता का पारितोषिक शीघ्र ही केसरीसिंह को 1914 ई. में 20 वर्ष के आजीवन कारावास के रूप में मिला। अपने जेल जीवन के दौरान उन्होंने ब्रिटिश सरकार की क्रूर अमानवीय यातनाओं को वीरतापूर्वक सहा और उनका डटकर सामना किया।

निष्कर्ष (Conclusions) –

राजस्थान के गौरवशाली इतिहास में चारण जाति का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। केसरीसिंह बारहठ ने इसी परम्परा का निर्वहन कर अपने विचारों व कार्यों द्वारा तत्कालीन राजपूताना में राजनीतिक जनजागरण और क्रांतिकारी कार्यों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे जीवनभर सामाजिक सुधारों एवं शैक्षणिक गतिविधियों से जुड़े रहे। उनका सम्पूर्ण जीवन राजपूताने में राजनीतिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक सुधारों हेतु समर्पित हो गया।

केसरीसिंह ने अपने लेखों व कविताओं के माध्यम से राजपूताना के नरेशों और नागरिकों के सुप्त गौरव एवं स्वाभिमान को जगाने का प्रयास किया और साथ ही अपने सामाजिक व शैक्षणिक सुधार कार्यक्रमों द्वारा उनमें एक नव–जागृति लाने का प्रयास किया। जब उन्हें इस दिशा में यथेष्ठ सफलता प्राप्त न हुई तो वे ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध चलाये जा रहे सशस्त्र क्रांति के यज्ञ में कूद पड़े और अपने समस्त परिवार को इसमें होम दिया। उनका सम्पूर्ण जीवन अपने समाज एवं राष्ट्र के पुनरूद्धार एवं स्वाभिमान की रक्षार्थ लड़े जा रहे संग्राम का एक अभिन्न अंग बन गया जिसमें उन्होंने अपने तन, मन, धन के साथ ही सम्पूर्ण परिवार को भी आहूत कर दिया। उनके विचार एवं सिद्धान्त हमें आज भी वर्तमान परिस्थितियों में उपयोगी प्रतीत होते हैं जिन पर अमल किए जाने की आवश्यकता है। उनका त्याग एवं बलिदान हमें आज अपने राष्ट्र के लिये कुछ कर दिखाने की प्रेरणा प्रदान करता है और आगे आने वाली पीढ़ियों के लिये भी यह प्रेरणास्त्रोत सिद्ध होगा।

मुख्य लेख –

राजस्थान की वीर प्रसूता भूमि ने यों तो अनेक महान् विभूतियों को जन्म दिया है परन्तु बारहठ केसरीसिंह का व्यक्तित्व उनमें कुछ अनूठा और विशिष्ट है। उनका व्यक्तित्व विभिन्न गुणों से समलंकृत था। वे कवि और महान् क्रांतिकारी होने के साथ ही समाज सुधारक और राजनीतिक पथ प्रदर्शक भी थे। इनका जन्म सम्वत् 1929, मार्गशीर्ष कृष्णा 6, तद्नुसार 21 नवम्बर, 1872 ई. को राजपूताना के मेवाड़ राज्यान्तर्गत शाहपुरा राज्य की अपनी पैतृक जागीर के गाँव देवपुरा में हुआ था।[1]

इनके पिता कृष्णसिंह बारहठ की गणना तत्कालीन राजपूताना के माने हुए राजनीतिज्ञ, इतिहासकार और विद्वानों में की जाती थी। एक विद्वान पुरूष होने के साथ ही कृष्णसिंह एक महान् देशभक्त भी थे और स्वामी दयानन्द सरस्वती के पट्ट शिष्यों में उनकी गिनती थी। मेवाड़ के प्रधानमंत्री और 'वीर विनोद' के रचयिता

कविराजा श्यामलदास के ये भानजे थे। वे मेवाड़ के महाराणा सज्जनसिंह और फतहसिंह तथा जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह के विश्वासपात्र व्यक्तियों में शामिल थे। ऐसे प्रसिद्ध एवं देशभक्त परिवार में जन्म लेने के कारण केसरीसिंह को एक महान् थाती विरासत में प्राप्त हुई। प्रारम्भ में केसरीसिंह भी अपने पिता के मार्गदर्शन में मेवाड़ राज्य की सेवा में कार्य करने लगे। परन्तु 1900 ई. में केसरीसिंह उदयपुर छोड़कर कोटा महाराव की सेवा में आ गये। उसके पश्चात उन्होंने कोटा को ही अपना स्थायी निवास बना लिया।[2]

अपने पिता के स्वाभिमानी एवं स्वतन्त्र विचारों से प्रभावित केसरीसिंह अपनी राजकीय सेवा के दौरान विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों एवं विचारधाराओं के सम्पर्क में आये। जिज्ञासु प्रकृति के केसरीसिंह ब्रिटिश दासता के नीचे कराहते हुए भारतीय समाज की पतितावस्था से काफी दुखी थे। भारत के प्राचीन राष्ट्रीय गौरव पर गर्व करने वाले केसरीसिंह अंग्रेजी शासन के जुए के नीचे छटपटा रहे थे। राजपूतों, चारणों एवं भारत की अन्य लड़ाकू जातियों की शौर्य एवं बलिदान की परम्पराओं पर गर्व करने वाले केसरीसिंह उनमें जागृति, एकता और संघर्ष का शंखनाद फूँकने के लिये तिलमिला रहे थे। उनका विश्वास था कि यदि राजपूताने की राजपूत, चारण आदि जातियाँ एक बार अंग्रेजों के विरूद्ध हथियार उठा लें तो राजपूताने में ब्रिटिश शासन का अंत हो जाएगा; और यदि एक बार राजपूताने से उनके पैर उखड़े तो अन्ततः भारत से ब्रिटिश शासन का अंत हो जाएगा।

केसरीसिंह ब्रिटिश सत्ता के चरणों में नत राजस्थानी नरेशों की क्लीवता और चाटुकारिता से अत्यन्त खिन्न थे। अपने प्रतापी पूर्वजों की तुलना में उनका यह गर्हित आचरण बारहठजी की दृष्टि में एक कलंक था। वे उन्हें उनके लुप्त गौरव का स्मरण दिलाकर उठ खड़े होने के लिये प्रेरित करना चाहते थे।[3] इसलिए जब भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन द्वारा 1 जनवरी 1903 ई. को महारानी विक्टोरिया के उत्तराधिकारी एडवर्ड सप्तम के ब्रिटिश सम्राट बनने के उपलक्ष्य में दिल्ली में एक विशाल दरबार का आयोजन किया गया और इस अवसर पर सम्पूर्ण भारत के राजा–महाराजाओं के साथ ही मेवाड़ के महाराणा फतहसिंह को भी दिल्ली में सार्वभौम सत्ता के प्रति राजभक्ति का विराट प्रदर्शन करने हेतु उपस्थित होने के लिये विवश किया गया तो ऐसे में केसरीसिंह ने अपनी काव्यप्रतिभा का चमत्कार दिखाते हुऐ उसी समय तेरह सोरठों की रचना की और उन्हें महाराणा को भिजवाया। '*चेतावणी रा चूंगट्या*' के नाम से प्रसिद्ध इन दोहों ने महाराणा के स्वाभिमान एवं नसों में दौड़ते हुए सिसोदियाई रक्त को उबाल दिया और उन्हें अपने गौरव का भान हो आया। इसीलिये दिल्ली पहुँचकर भी महाराणा ब्रिटिश सम्राट के दरबार में नहीं गया।[4]

1900 से 1914 ई. के बीच का समय केसरीसिंह के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल था। इस दौरान उन्होंने जातीय और सामाजिक सुधारों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। वे इतिहास में क्षत्रिय जाति की भूमिका से भली–भांति परिचित थे और मानते थे कि यदि क्षत्रिय जाति के लोग सामाजिक पतनावस्था के गर्त से निकाल लिये जाएँ और उन्हें अपने जातीय गौरव और राष्ट्रीय दायित्व के प्रति जागृत कर दिया जाये तो देश का इतिहास बदल सकता है। इसलिये उन्होंने उनमें सामाजिक कुरीतियों, कुप्रथाओं और रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति एवं संगठन का कार्य प्रारम्भ किया और वे समाज सुधार एवं राष्ट्रीय शिक्षा के माध्यम से राजपूताना में स्वातंत्र्य चेतना के विकास हेतु प्रयास करने लगे।[5] उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा के माध्यम से राजपूताना के निवासियों में नवजागरण की योजनाएँ बनाईं। केसरीसिंह का दृढ़ विश्वास था कि जब तक समस्त क्षत्रिय जाति को अशिक्षा के अन्धकार से मुक्त नहीं किया जाता, उनमें अच्छे संस्कार, सद्विचार एवं स्वाभिमान के भाव पैदा नहीं हो सकते। मेयो कॉलेज, अजमेर जैसी शिक्षण संस्थाओं में दी जा रही शिक्षा को वे भारतीय बालकों के लिये घातक मानते थे क्योंकि इससे उनमें दासता एवं हीनता के संस्कार ही पैदा होते थे। उनका विचार था कि बच्चों एवं नवयुवकों को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिये, जिससे उन्हें अपनी जाति, देश एवं संस्कृति के इतिहास का वास्तविक ज्ञान हो और उनमें आत्माभिमान एवं देशभक्ति के संस्कार पैदा हों तथा आत्मविश्वास और आत्मबल जागृत हो। ऐसी शिक्षा प्राप्त युवक ही देश की स्वतन्त्रता एवं तरक्की की बात सोच सकते हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने 1904 से 1913 ई. के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचार–प्रसार की कई योजनाएँ बनाईं।[6] राजपूताने में शिक्षा प्रचार के कार्य में केसरीसिंह ने अनेकों राजाओं, सामंतों एवं जागीरदारों का सहयोग प्राप्त करने का प्रयास किया। इस सम्बन्ध में खरवा के ठिकानेदार राव गोपाल सिंह उनके प्रमुख सहयोगी रहे।

इस प्रकार अंग्रेजी दासता से मातृभूमी की मुक्ति के लिये अदम्य इच्छा रखने वाले दूरदृष्टा केसरीसिंह ने राष्ट्रीय आजादी की प्राप्ति हेतु क्षत्रिय जाति के लोगों में क्षात्र–धर्म, जातीय सुधार, राष्ट्रीय–शिक्षा एवं देशभक्ति के विचारों के प्रसार का कार्य प्रारम्भ किया। परन्तु शीघ्र ही उन्हें यह महसूस हुआ कि उनमें दासता, परावलम्बता एवं हीनता की जड़ें इतनी गहरी जमीं हुई हैं कि उनमें व्याप्त बुराईयों और पतित मनोवृत्तियों को

मिटाना और उनमें स्वाभिमान एवं राष्ट्राभिमान की भावनाएँ पैदा करना अत्यन्त कठिन और दुष्कर कार्य है। यद्यपि वे सुधारवादी एवं जन–जागृति के कार्यों में लगे रहे लेकिन उन्हें यह विश्वास हो गया था कि सत्ता परिवर्तन के बिना जातीय एवं राष्ट्रीय उत्थान का कार्य संभव नहीं होगा। अतः केसरीसिंह जैसा दृढ़प्रतिज्ञ, मेधावी एवं साहसी व्यक्ति अन्य मार्ग एवं साधन ढूँढ़ने लगा और वह सुधारवाद से क्रांतिवाद की ओर मुड़ गये।[7]

उस समय उत्तरी भारत में लाला हरदयाल, रासबिहारी बोस, शचीन्द्रनाथ सान्याल आदि के नेतृत्व में 'अभिनव भारत समिति' नामक क्रांतिकारी संगठन के कार्य का प्रसार हो रहा था। इन्हीं दिनों केसरीसिंह के साथ उनका सम्पर्क स्थापित हुआ और स्वतन्त्र एवं उग्र विचारों वाले केसरीसिंह तत्काल भारत की आजादी के लिये प्रयत्नशील इस क्रांतिकारी योजना में शरीक हो गये। उनका विचार था कि बंगाल की गुप्त समितियों के नमूने पर राजस्थान में भी गुप्त समितियाँ गठित की जाएँ और नवयुवकों को उसी तरह से राष्ट्रसेवा के लिये प्रशिक्षित किया जाये।[8] राजपूताना में क्रांतिकारी गतिविधियों को गति देने के प्रयोजन से उन्होंने महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस से सम्पर्क स्थापित किया और 'अभिनव भारत समिति' नामक क्रांतिकारी संगठन से भी सम्बन्धित हो गये। उन्होंने राजपूताना में इस क्रांतिकारी संगठन की स्थापना कराई और अमीरचन्द तथा बृजमोहन माथुर को इसकी राजपूताना शाखा का संचालक बनाया।[9] केसरीसिंह के साथ खरवा के ठाकुर राव गोपालसिंह, जयपुर के अर्जुनलाल सेठी तथा ब्यावर के सेठ दामोदरदास राठी राजपूताना में 'अभिनव भारत' संगठन के प्रमुख सूत्रधार बने, जिसमें बाद में केसरीसिंह के छोटे भाई जोरावर सिंह, पुत्र प्रताप सिंह और जामाता ईश्वरदान आशिया भी सम्मिलित हुए।[10]

क्रांतिकारी कार्य में व्यापक स्तर पर राजपूताने के नवयुवकों को शामिल करने की दृष्टि से 1910 ई. में केसरीसिंह ने राजपूताने में 'वीर भारत सभा' (अभिनव भारत की शाखा) नामक संगठन की स्थापना की।[11] यह सभा भारत के राष्ट्रीय आंदोलन की क्रांतिकारी विचारधारा की एक कड़ी मानी जा सकती है। राजस्थान में इसकी एक गुप्त संगठन के रूप में स्थापना हुई थी।[12] केसरीसिंह बारहठ के साथ ही खरवा के राव गोपालसिंह, जयपुर के अर्जुनलाल सेठी तथा ब्यावर के सेठ दामोदरदास राठी इस संगठन के आधारस्तम्भ थे।[13]

केसरीसिंह एक अनन्य देशभक्त थे। दूसरों को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देने से पूर्व उन्होंने देश के लिये सर्वस्व समर्पण का कार्य अपने घर से प्रारम्भ किया। उनके आदर्श चरित्र और दृढ़ विचारों के कारण उनका सम्पूर्ण परिवार देशभक्ति के रंग में रंग गया। उनकी प्रेरणा से उनका अनुज जोरावरसिंह, पुत्र प्रतापसिंह और जामाता ईश्वरदान आशिया जीवन की आहुति माँगने वाले क्रांतिकारी कार्य में कूद पड़े। यह जानते हुए भी कि क्रांतिकारियों का मार्ग अत्यन्त खतरनाक और मौत की ओर ले जाने वाला है, उन्होंने अपने प्राणप्रियों को बलिदान की बलिवेदी पर न्यौछावर हो जाने को भेज दिया। निःसंदेह ऐसे उदाहरण बिरले ही मिलते हैं। इसी से प्रेरित होकर रासबिहारी बोस ने कहा था – ''ऐसे उदाहरण तो हैं कि पिता ने पुत्र को देश की बलिवेदी पर चढ़ने को भेज दिया। परन्तु मेरे सामने केसरीसिंह का ही यह पहला उदाहरण है जिसने अपने पुत्र के साथ जामाता को भी इस ओर आगे कर दिया।''[14]

यद्यपि ठाकुर केसरीसिंह की गतिविधियों का मुख्य क्षेत्र कोटा था परन्तु वे जयपुर के अर्जुनलाल सेठी और खरवा के राव गोपालसिंह से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित थे। वस्तुतः राजस्थान में इन तीनों व्यक्तियों द्वारा शैक्षिक गतिविधियों की आड़ में ऐसे क्रांतिकारी नवयुवकों को तैयार किया जा रहा था जो ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध होने वाले संघर्ष में प्रत्येक दृष्टि से समर्थ हों। योजनानुसार अर्जनुलाल सेठी ने जयपुर में वर्धमान जैन विद्यालय प्रारम्भ किया। केसरीसिंह जिन युवकों को अपने क्रांतिदल में भर्ती करते उन्हें प्रशिक्षण के लिये अर्जुनलाल सेठी के विद्यालय में भेजा जाता, जहाँ उनमें देशभक्ति की भावना और क्रांति के प्रति अभिरूचि उत्पन्न की जाती। वस्तुतः यह विद्यालय क्रांतिकारियों के सम्पर्क का केन्द्र बन गया जहाँ नवयुवकों को क्रांतिकारी विचारों में दीक्षित और प्रशिक्षित करने का कार्य किया जाता था। केसरीसिंह ने अपने पुत्र प्रतापसिंह और जामाता ईश्वरदान आशिया को भी अध्यन हेतु यहाँ भेजा था।

केसरीसिंह राजपूत बालकों की शिक्षा के लिये जगह–जगह छात्रावास स्थापित करके छात्रों में विदेशी सत्ता के विरूद्ध क्रांतिकारी विचारों के प्रसार में लगे हुए थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने कोटा और जोधपुर में बोर्डिंग हाउस स्थापित किये, जहाँ बालकों एवं नवयुवकों में राष्ट्रीय एवं क्रांतिकारी विचार भरे जाते थे।[15] कोटा में रहते हुए ही केसरीसिंह ने अपना एक गुप्त क्रांतिकारी संगठन भी बना लिया था, जिसमें बंगाल की गुप्त समितियों की भांति युवकों को राष्ट्रीय सेवा के लिये प्रशिक्षित किया जाता था।

इस समय अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के संचालन हेतु इस संगठन को धन की कमी का सामना करना पड़ रहा था। इससे उबरने के लिये केसरीसिंह और उनके दल के द्वारा जोधपुर के रामस्नेही रामद्वारे के धनी महन्त प्यारेराम को लूटने की योजना बनाई गई और 25 जून 1912 ई. को महन्त प्यारेराम की हत्या कांतिकारियों द्धारा कर दी गई।[16] परन्तु जबरदस्त खोजबीन व जाँच–पड़ताल के बावजूद पुलिस किसी भी क्रांतिकारी को लगभग छः माह तक गिरफ्तार न कर सकी। कुछ समय उपरान्त ही विष्णुदत्त ने, जो कि अर्जुनलाल सेठी और केसरीसिंह के सम्पर्क में कार्य कर रहा था, राजपूताना के क्रांतिकारी युवकों के सहयोग से बिहार प्रान्त के आरा जिले के नीमेज गाँव में एक मठाधीश महन्त को लूटने की योजना बनाई। उक्त कार्य में उसके साथी अर्जुनलाल सेठी की जैन पाठशाला के तीन युवक मोतीचन्द, माणकचन्द और जयचन्द थे। कोटा के युवकों में बारहठ जोरावरसिंह और उसके साथी थे। अजमेर के आर्यसमाज छात्रावास के दो छात्र सोमदत्त लहरी और नारायणसिंह भी उनके साथ थे।[17] विष्णु दत्त के नेतृत्व में इस दल ने बनारस की ओर प्रस्थान किया और 20 मार्च 1913 ई. को उस महन्त व उसके नौकर की हत्या कर दी, परन्तु दुर्भाग्य से क्रांतिकारियों के हाथ केवल एक टाईम–पीस घड़ी व पानी पीने के बर्तन के अतिरिक्त कुछ भी हाथ न लग सका।[18]

इसी बीच ब्रिटिश सरकार को अपने विरूद्ध राजपूताने में षड़यंत्रों का आभाष मिल चुका था और केसरीसिंह के विचारों, प्रचार–प्रसार और संगठन के कार्यों को देखकर उन पर पूरा सन्देह हो गया था। एक लम्बे अर्से से ब्रिटिश सरकार केसरीसिंह की अंग्रेज विरोधी नीति के कारण क्रुद्ध थी, किन्तु किसी ठोस प्रमाण के अभाव में वह उनको नहीं पकड़ पा रही थी। परन्तु दिल्ली षड़यंत्र केस में प्रसिद्ध क्रांतिकारी मास्टर अमीरचन्द के मकान की तलाशी के दौरान पुलिस को अर्जुनलाल सेठी और तत्पश्चात केसरीसिंह के विरूद्ध सबूत हाथ लगे। जब इस सम्बन्ध में पुलिस द्धारा गहन छानबीन की गई तो लगभग एक वर्ष पूर्व जोधपुर के महन्त प्यारेलाल की रहस्यमय हत्या का मामला उजागर हो गया। अब ब्रिटिश सरकार द्धारा महन्त प्यारेलाल की हत्या का केस बनाकर केसरीसिंह को गिरफ्तार कर लिया गया और उनके साथ ही राजपूताने में कार्यरत सभी क्रांतिकारी अलग–अलग स्थानों पर गिरफ्तार कर लिये गये।

इस प्रकार केसरीसिंह की गिरफ्तारी के साथ ही राजस्थान का क्रांतिकारी दल एवं उसके कार्यकर्ता छिन्न–भिन्न हो गये। वस्तुतः केसरीसिंह प्रारम्भ से ही अपनी ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों एवं अपने भड़काऊ बयानों तथा नवयुवकों को देशभक्ति की राह और क्रांतिपथ पर अग्रसर करने की नीतियों के कारण ब्रिटिश हुकूमत की आँख की किरकिरी बने हुए थे। सरकार के पुलिस विभाग के साथ ही सी.आई.डी. भी उन पर लगातार सर्तक निगाहें रखे हुए थी, जिसकी परिणिती केसरीसिंह के महन्त प्यारेलाल की हत्या के केस में फँसने और अन्ततः उनकी गिरफ्तारी के रूप में हुई। पुलिस द्धारा केसरीसिंह को 31 मार्च 1914 ई. को बिना अभियोग लगाए गिरफ्तार कर लिया।[19]

ठाकुर केसरीसिंह को उनके पैतृक निवास स्थान शाहपुरा से गिरफ्तार कर इन्दौर ले जाया गया, जहाँ उन्हें तीन महीने तक मऊ में सैनिक छावनी में कैद रखा गया। बाद में वे 3 जून को इन्दौर से कोटा लाए गये और कोटा की स्पेशल अदालत में उन पर महन्त प्यारेराम हत्याकांड, राजद्रोह एवं राजनैतिक षड़यन्त्र का मुकद्दमा चलाया गया। 6 अक्टूबर 1914 को केसरीसिंह को बीस वर्ष की आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। स्पेशल अदालत द्वारा ठाकुर केसरीसिंह को न केवल बीस वर्ष के कठोर कारावास की सजा ही दी गई अपितु उनकी हजारों रूपयों की वार्षिक आय की देवपुरा की सम्पूर्ण पैतृक जागीर और शाहपुरा स्थित उनकी हवेली और सारी सम्पत्ति भी अंग्रेज सरकार के दबाव के कारण शाहपुरा राजाधिराज द्वारा जब्त कर ली गई। उनके घर के बर्तन तक नीलाम कर दिये गये।

कारावास की सजा होने के कुछ समय बाद ही भारत सरकार के वैदेशिक विभाग के दबाव से उन्हें कोटा जेल से हटाकर बिहार की हजारीबाग सेन्ट्रल जेल में भेज दिया गया।[20] जेल में केसरीसिंह को महान् आघात सहन करने पडे, किन्तु देशभक्त एवं बलिदानी केसरीसिंह लेशमात्र भी विचलित नहीं हुए और अमानुषिक अत्याचारों से भी अविचलित रहकर उन्होंने जेल–जीवन की महान् यातनाओं को सहन किया।[21] इधर उनके परिवार पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। सम्पूर्ण जागीर, हवेली आदि जब्त हो जाने के कारण केसरीसिंह की पत्नी एवं बच्चे वेघरबार हो गये। पुत्र प्रताप बरेली जेल में शहीद हो चुका था और अनुज जोरावरसिंह फरार था। परन्तु उन्होंने और उनके परिवार ने धैयपूर्वक इन विपत्तियों का सामना किया। उन्हीं दिनों आजीवन कारावास हो जाने के पश्चात् कोटा सेन्ट्रल जेल से सन् 1915 में ठाकुर केसरीसिंह ने अपनी पुत्री चन्द्रमणि को जो पत्र[22] लिखा वह उनकी महान् देशभक्ति और उत्कट आत्मबलिदान की भावना का परिचायक है। उन्होंने

लिखा था – *''भारत में जन्म लेने के साथ ही जो कर्तव्य मानव जीवन के साथ अविच्छिन्न प्राप्त होते हैं, जो ऋण प्रत्येक देश संतान पर, चाहे पुरूष हो चाहे स्त्री, सब पर रहता है, उसी कर्तव्य को पूर्ण करने, उसी ऋण से मुक्त होने में हमारा कल्याण है ..... तुम अवश्य यह जानकर संतुष्ट होगी कि भारत के एक महत्वपूर्ण प्रदेश में जागृति होने का प्रारम्भ अपने परिवार की महान् आहुति से ही हुआ है। इस राजसूय यज्ञ में हम लोगों की बलि मंगलरूप हुई है।''*

सन्दर्भ एवं टिप्पणियाँ –

1. क्रांतिकारी बारहठ केसरीसिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, (संपादक–देवीलाल पालीवाल, ब्रजमोहन जावलिया, फतेहसिंह), भाग–1, उदयपुर, 1984, पृ. 9
2. वही, पृ. 13
3. कन्हैंयालाल राजपुरोहित, स्वाधीनता संग्राम में राजस्थान की आहुतियाँ, जोधपुर, 1992, पृ. 103
4. रघुवीर सिंह, पूर्व–आधुनिक राजस्थान, जयपुर, 1990, पृ. 186–187
5. कन्हैंयालाल राजपुरोहित, पूर्वोक्त, पृ. 101
6. प्रमोद कुमार, राजस्थान में नवजागरण एवं क्रांतिकारी आंदोलन के विकास में ठाकुर केसरीसिंह बारहठ की भूमिका, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर, पृ. 26–35
7. क्रांतिकारी बारहठ केसरीसिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, भाग–1, पृ. 21
8. प्रमोद कुमार, पूर्वोक्त, पृ. 36
9. शंकर सहाय सक्सेना, देश जिन्हें भूल गया, बीकानेर, 1982, पृ. 134
10. प्रकाश नारायण नाटाणी, राजस्थान निर्माण के पचास वर्ष, जयपुर, 1999, पृ. 36
11. शिवचरण मेनारिया, राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी, जयपुर, 1995, पृ. 119
12. पृथ्वीसिंह मेहता, हमारा राजस्थान, इलाहाबाद, 1950, पृ. 304
13. बी.एल. पानगड़िया, राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम, जयपुर, 1985, पृ. 13
14. लेख–हरिप्रसाद अग्रवाल, राजस्थान केसरी ठाकुर केसरीसिंह बारहठ–पुष्प स्मरण, (संपादक–सवाईसिंह धमोरा), शाहपुरा(मेवाड़), 1976, पृ. 96
15. नाटाणी, पूर्वोक्त, पृ. 36
16. के.एस. सक्सेना, द पॉलिटिकल मूवमेंटस एण्ड अवेकनिंग इन राजस्थान, जयपुर, 1990, पृ. 135
17. सुरजनसिंह शेखावत, राव गोपाल सिंह खरवा, जयपुर, 1996, पृ. 41
18. जहूर खां मेहर एवं सुखवीर सिंह गहलोत, राजस्थान में स्वतन्त्रता आंदोलन का इतिहास, जोधपुर, 1992, पृ. 68–69
19. हरिप्रसाद अग्रवाल, आजादी के दीवाने, ब्यावर, 1951, पृ. 8
20. शिवचरण मेनारिया, पूर्वोक्त, पृ. 120
21. कन्हैंयालाल राजपुरोहित, पूर्वोक्त, पृ. 113
22. श्री फतहसिंह 'मानव', अजमेर के निजी संग्रह से प्राप्त। केसरीसिंह ने 1914 ई. के अंत में आजन्म कारावास हो जाने के पश्चात कोटा सेन्ट्रल जेल से यह पत्र अपनी पुत्री सौ. चन्द्रमणि देवी को लिखा था।